5 सल्तनत कालीन जन–जीवन

पिछले अध्यायों में हमने पढ़ा कि कैसे दिल्ली में तुर्क सुल्तानों का शासन स्थापित हुआ। इस नए शासन का हमारे देश के लोगों के जीवन और संस्कृति पर क्या असर पड़ा होगा, आइए इस पाठ में पढ़ें।

विदेशियों का आगमन

सल्तनत के बनने का एक मुख्य परिणाम यह हुआ कि ईरान, ईराक, तुर्किस्तान, समरकंद और बुखारा जैसे इलाकों से बहुत सारे लोग भारत आकर बसे। वे न केवल भारत में आकर बसे, अपितु उन्होंने इसे अपना देश माना। इनमें से प्रमुख था अमीर खुसरो जिसने अपने आपको हिन्दुस्तानी तुर्क कहा। उसने फारसी के साथ–साथ यहाँ की आम बोलचाल की भाषा हिंदवी में भी कविताएँ लिखीं। उसने हिन्दुस्तान की प्रशंसा में कई कविताएँ लिखीं। इसी तरह कई भाषाएँ बोलनेवाले कारीगर, विद्वान संत आदि भारत आकर बसे। विदेशों से बड़ी संख्या में लोगों के इस तरह आने के पीछे एक और कारण था। उन दिनों चंगेज खाँ नामक मंगोल आक्रमणकारी पूरे मध्य एशिया के राज्यों को हराकर उनकी सभ्यता को नष्ट कर रहा था। उसके भय से इन लोगों ने दिल्ली सल्तनत में शरण ली थी। इन सब लोगों ने अपनी हुनर, अपनी विद्वता और धार्मिकता से भारतीय संस्कृति को और समृद्ध किया।

शासक और शासन

सल्तनतकाल में सुल्तान ही सबसे शक्तिशाली और महत्वपूर्ण होता था। शुरू के सुल्तान गुलामी से उठकर सुल्तान बने थे। इस कारण उनके बड़े अधिकारी व सेनापति उनसे दबकर नहीं रहना चाहते थे। लेकिन बल्बन, अलाउद्दीन खिलजी आदि के समय तक सुल्तान राज्य का सर्वेसर्वा बन गया था। बड़े अधिकारी व सेनापति, जिन्हें अमीर कहा जाता था, उन पर सुल्तान का पूरा नियंत्रण बन गया। इस तरह सुल्तान निरंकुश शासक बन गये।

इससे पहले भारत में कई छोटे–छोटे राज्य थे। अब उनकी जगह एक बड़ी सल्तनत बन गयी थी। लेकिन पुराने छोटे राजा समाप्त नहीं हुये थे। वे सुल्तान के अधीन जमींदार बनकर रहने लगे। पहले राजा के अधिकारी उनके रिश्तेदार होते थे और उनका पद प्रायः वंशानुगत होता था। लेकिन अब सुल्तान का अधिकारी कोई भी हो सकता था। कोई भी पद पिता से पुत्र को नहीं मिलता था। राज्य के अधिकारियों का लगातार तबादला भी होता रहता था।

सल्तनत के बनने से शासन व्यवस्था में कौन–कौन से तीन महत्वपूर्ण बदलाव आए ?

गाँव के लोगों के जीवन में बदलाव

पहले की तरह लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती ही था। लेकिन सल्तनत की लगान व्यवस्था का असर लोगों पर पड़ा। आपको याद होगा कि पहले गाँव किसी न किसी सामंत के राजस्व

वसूली के लिए दिया जाता था और वह मनमाने तरीके से तरह–तरह के छोटे–बड़े कर वसूल करता था। लेकिन अब सुल्तानों ने इस व्यवस्था को समाप्त कर दिया। अब सुल्तान के अधिकारी लगान इकट्ठा करते थे। कई छोटे करों की जगह एक बड़ा लगान तय किया गया। यह खेत की उपज का लगभग आधा था। यह लगान गाँव के मुखिया इकट्ठा करके सुल्तान के अधिकारियों को देते थे। अक्सर सुल्तान किसानों को लगान नगद देने पर मजबूर करते थे। इस कारण किसानों को अपना अनाज शहरों में ले जाकर बेचना पड़ता था। इससे किसानों का शहरों में आना जाना बढ़ गया।

शहरों में बदलाव

सुल्तान व उसके अधिकारी शहरों में ही बसे थे और किसानों से इकट्ठा किए गए लगानों को शहरों के विकास में खर्च करते थे। इससे शहरों का तेजी से विकास हुआ। वहाँ अब तरह–तरह के कारीगर, मिस्त्री, बुनकर, दर्जी, बढ़ई, लोहार आदि बसने लगे। शहरों के विकास के साथ व्यापार भी बढ़ा। तुर्क अपने साथ कई नए तकनीक और उद्योग लाए। इसका लोगों के व्यवसाय और संस्कृति पर गहरा असर पड़ा।

चित्र–5.1 मीनार, गुंबद और मेहराब

मध्य एशिया के कारीगर जो तुर्कों के साथ भारत आए इमारत बनाने के कई नये तरीकों को भी साथ लाए। इनमें से महत्वपूर्ण थे, जुड़ाई में चूना–गारे का प्रयोग, मीनार, गुंबद व मेहराब का उपयोग। आप आज भी इनका उपयोग अपने आस–पास की इमारतों में देख सकते हैं।

आप जिस पुस्तक को पढ़ रहे हैं वह कागजों से बनी है। कागज बनाने की कला और पुस्तकों पर जिल्द चढ़ाने की कला भारत में तुर्क लाए। उन्होंने वह कला चीन के लोगों से सीखी थी। घोड़ों के खुरों पर नाल लगाना और रकाब लगाना भी तुर्कों ने ही भारत में शुरू करवाया। इसी तरह सूत कातने के लिए चरखे का उपयोग सल्तनतकाल में हुआ था। इससे पहले लोग तकली से सूत कातते थे। तुर्कों के प्रभाव से नए तरह के सिले हुए कपड़ों, खासकर पायजामा–कुरता, सलवार कमीज आदि का उपयोग भारत में शुरू हुआ। इसी काल में नए तरह के पकवानों का चलन भी शुरू हुआ। जैसे– हलुआ, समोसा, आदि। उस समय समोसा में कीमा भरकर तला जाता था।

संदर्भ–मध्यकालीन भारत – लेखक इरफान अली

दूसरी ओर तुर्कों ने भी भारत से कई बातें सीखीं। अल्बरूनी भारत आया ही इसीलिए था। उसने क्या सीखा याद करें ?

अरब के विद्वानों ने भारत के विद्वानों से गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद और योग सीखकर अपने देशों में उनका प्रसार किया। गिनती में शून्य का उपयोग करना भारत के विद्वानों से अरब के गणितज्ञों ने सीखा और उसे यूरोप में फैलाया। उन्होंने पंचतंत्र की कहानियों एवं आयुर्वेद के ग्रंथों को अरबी एवं फारसी भाषा में अनुवाद किया और इनसे लाभ उठाया।

धर्म

सल्तनत काल में इस्लाम धर्म का प्रभाव काफी बढ़ा। भारत में इस्लाम का आगमन कई सदियों पहले हो गया था। यह धर्म पश्चिमी तट पर अरब व्यापारियों के साथ आया था। सुल्तानों ने इस्लाम को काफी बढ़ावा दिया। उन्होंने बड़ी–बड़ी मस्जिदें बनवाईं और इस्लामी संतों व धार्मिक विद्वानों को बहुत धन दान में दिया। मंगोल आक्रमण के कारण मध्य एशिया से भी कई इस्लामी विद्वान व संत भारत आए।

शेख निजामुद्दीन औलिया व अमीर खुसरो

शेख निजामुद्दीन औलिया दिल्ली में रहनेवाले एक प्रसिद्ध सूफी संत थे। उनके खानकाह (आश्रम) में फकीर, मौलवी, योगी, बड़े–बड़े अधिकारी, गाँव–शहर के आम लोग सभी जाते थे और उनसे धर्म की बातों पर चर्चा करते थे। आमतौर पर सूफी संत दो बातों पर जोर देते थे– ईश्वर से प्रेम व दुखी लोगों की सेवा।

अमीर खुसरो शेख निजामुद्दीन के प्रिय शिष्य थे। वे एक सैनिक होने के साथ–साथ एक प्रसिद्ध कवि भी थे। उन्होंने फारसी व हिंदवी (हिन्दी का पुराना स्वरूप) में अनेक कविताएं लिखीं। उन्हें पशु–पक्षी, ज्ञान–विज्ञान और संगीत से बेहद लगाव था। आपने तबले और सितार की मधुर आवाजें तो सुनी होंगी। कहा जाता कि इनका आविष्कार भी अमीर खुसरो ने ही किया था। वह कहते थे– संगीत के प्रति न केवल मनुष्यों बल्कि पशुओं का भी आकर्षण है। उन्हें हिंदवी और हिंदुस्तान से बहुत प्रेम था। उन्होंने हिन्दुस्तान की प्रशंसा में कई गीत लिखे। वे अपने आपको **तोता–ए–हिंद** कहते थे। उनकी पहेलियाँ आज भी लोगों की जुबान पर होती हैं। क्या आप उनके इन पहेलियों के उत्तर बता सकते हैं ?

1. सावन भादो खूब चलत है, माघ पूस में थोरी।
   अमीर खुसरों यूं कहे, तू बूझ पहेली मोरी।।
2. एक थाल मोती से भरा।
   सबके सिर पर औंधा धरा।।

इन सबके प्रभाव में भारत के कई लोगों ने परिस्थितिवश इस्लाम धर्म को स्वीकार किया। इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है जो एक ही ईश्वर को मानता है। इस्लाम में मूर्तिपूजा वर्जित है और इसमें जात–पात, ऊँच–नीच आदि भावनाओं के लिए भी जगह नहीं है। इस्लाम में माना गया है कि सभी लोग ईश्वर के सामने समान हैं। सभी लोग मिलकर सरल और सीधे तरीके से ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं।

सल्तनत काल की स्थापना के पूर्व इस्लाम में कई धाराएँ और संप्रदाय बन गए थे जैसे शिया, सुन्नी, सूफी, इस्माइली आदि। इन सभी सम्प्रदायों से संबंधित मुसलमान, विद्वान व संत भारत में बस गए।

सल्तनत काल में इस्लाम व हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदायों के बीच विचारों का आदान–प्रदान और मेल–मिलाप हुआ। इस्लाम के एकेश्वरवाद ने हिंदू संतों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। उसी तरह योग और गीता का गहरा प्रभाव इस्लामी संतों पर भी पड़ा। कई संत इस नतीजे पर पहुँचे कि सभी धर्म एक ही ईश्वर की भक्ति की बात करते हैं। वे विभिन्न धर्मों के बीच के अंतर को मिटाना चाहते थे। ऐसे ही संत थे कबीर व नानक। कबीर व नानक जैसे संत ऊँच–नीच, जात–पाँत का विरोध करते थे साथ ही सभी धर्मों के आडंबर एवं पाखंड को समाप्त करना चाहते थे। वे ईश्वर के प्रति सच्चे प्रेम और मानवता के मूल्यों को बढ़ावा देना चाहते थे। छत्तीसगढ़ में सर्वधर्म समभाव एवं सामाजिक सद्भाव की भावना सर्वत्र विद्यमान थी।

अभ्यास के प्रश्न

LCXDBR

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. सल्तनत काल में लोगों का मुख्य व्यवसाय ..... था।
2. अमीर खुसरो ..... के शिष्य थे।
3. ..... अपने आपको तोता–ए–हिंद कहते थे।
4. सल्तनत के स्थापित होने से पुराने राजा सुल्तान के अधीन ..... बनकर रहने लगे।
5. गिनती में शून्य का उपयोग ..... के विद्वानों की देन है।

2. प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. दिल्ली सल्तनत काल में कहाँ–कहाँ से लोग भारत में आकर बसने लगे ?
2. सल्तनत काल में सबसे शक्तिशाली कौन होता था ?
3. सल्तनतकालीन किन्हीं दो संतों के नाम लिखें।
4. सल्तनत काल में बड़े अधिकारी और सेनापति को क्या कहा जाता था ?
5. दिल्ली सल्तनत की स्थापना से गाँव के लोगों के जीवन में क्या बदलाव आया ?
6. तुर्कों के आगमन से भवन निर्माण कला के क्षेत्र में क्या परिवर्तन हुए ?
7. तुर्कों ने भारत से क्या–क्या सीखा ?
8. तुर्कों ने हमारे सामाजिक जनजीवन को कैसे प्रभावित किया ?
9. संतों के मेल–मिलाप ने किस नई विचारधारा को जन्म दिया ?

योग्यता विस्तार–

1. सल्तनत कालीन विद्वानों एवं सूफी–संतों की सूची बनाइए और उनके चित्र इकट्ठे कीजिए।
2. कबीर के बारे में पता करें एवं उनकी कुछ कविताओं को ढूँढ़कर लिखिए।